



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 983]

नई दिल्ली, मंगलवार, नवम्बर 16, 2004/कार्तिक 25, 1926

No. 983]

NEW DELHI, TUESDAY, NOVEMBER 16, 2004/KARTIKA 25, 1926

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 16 नवम्बर, 2004

**का.आ. 1266(अ).—**यतः मेघालय के अचीक नेशनल वालंटियर काउंसिल (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'एएनवीसी' कहा गया है) ने हिंसा छोड़ने पर सहमत होने तथा अपनी मांगों को पूरा करने के लिए भारत के संविधान के दायरे में वार्ता करने की इच्छा व्यक्त करने के बावजूद धन संग्रह करना और जबरन धन वसूलना, अत्याधिक हथियार प्राप्त करना तथा नए कार्यकर्ताओं की भर्ती करना जारी रखा है :

और यतः, मेघालय का हन्नीवट्रेप नेशनल लिब्रेशन काउंसिल (जिसे इसमें इसके बाद एचएनएलसी कहा गया है) ने :

- मेघालय को भारत संघ से अलग करने के अपने उद्देश्य की खुले आम घोषणा की है;
- अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सशस्त्र साधनों का उपयोग जारी रखा है;
- अपने संगठन के लिए धन संग्रह हेतु नागरिकों को डराना-धमकाना, उनसे धन ऐंठना और उन्हें लूटना जारी रखा है;

और यतः, एएनवीसी तथा एचएनएलसी दोनों :

- शस्त्र एवं गोलाबारूद प्राप्त करने के लिए तथा हिंसा, जबरन धन वसूली, डराने-धमकाने एवं लूटपाट के कार्य करने के लिए पूर्वोक्त क्षेत्र के अन्य विद्रोही गुटों के साथ संपर्क बनाए हुए हैं;
- आश्रय, प्रशिक्षण तथा चोरी छुपे शस्त्र एवं गोलाबारूद प्राप्त करने के प्रयोजन के लिए कुछ पड़ोसी देशों में शिविर स्थापित किए हुए हैं;

और यतः केन्द्रीय सरकार का मत है कि उपरोक्त कारणों से एएनवीसी और एचएनएलसी और उनके द्वारा गठित अन्य निकाय विधिविरुद्ध संगम है;

और यतः, केन्द्रीय सरकार का भी यह मत है कि अचीक नेशनल वालंटियर काउंसिल (एएनवीसी) और हन्नीवट्रेप नेशनल लिब्रेशन काउंसिल (एचएनएलसी) की उपरोक्त गतिविधियां भारत की प्रभुसत्ता और अखण्डता को विच्छन्न करने के लिए आशयित है और यदि इन पर तत्काल नियंत्रण न किया गया तो ये संगठन पुनर्संगठित होंगे, पुनः शस्त्रों से लैस होंगे, अपने कार्यकर्ताओं की संख्या बढ़ाएंगे, अत्याधुनिक हथियार प्राप्त करेंगे, भारी संख्या में नागरिकों और सुरक्षा बलों की हत्या करेंगे और मेघालय को भारत से विलग करने के अपने उद्देश्य के लिए अपनी गतिविधियां बढ़ाएंगे;

अतः, अब, विधिविरुद्ध गतिविधियां (निवारण) अधिनियम, 1967 (1967 का 37) की धारा 3 की उप-धारा (1) के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार, एतद्वारा, अचीक नेशनल वालंटियर काउंसिल (एएनवीसी) और हन्नीवट्रेप नेशनल लिब्रेशन काउंसिल (एचएनएलसी) को इनके सभी गुटों, विंगों और मुख्य संगठनों सहित विधिविरुद्ध संगम घोषित करती है।

केन्द्रीय सरकार का भी यह मत है कि अचीक नेशनल वालंटियर काउंसिल (एएनवीसी) और हन्नीवट्रेप नेशनल लिब्रेशन काउंसिल (एचएनएलसी) को इनके सभी गुटों, विंगों और मुख्य संगठनों सहित तत्काल प्रभाव से विधिविरुद्ध संगम घोषित करना आवश्यक है, और तदनुसार

धारा 3 की उपधारा (3) के परन्तुक द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार, एतद्वारा, निदेश देती है कि यह अधिसूचना उक्त अधिनियम की धारा 4 के अधीन किए जा सकने वाले किसी आदेश के अध्वधीन सरकारी राजपत्र में इसके प्रकाशित होने की तारीख से प्रभावी होगी।

[फा. सं. 11011/47/2004-एन.ई.-III]

एच. एस. ब्रह्मा, संयुक्त सचिव

## MINISTRY OF HOME AFFAIRS

### NOTIFICATION

New Delhi, the 16th November, 2004

**S.O. 1266(E).**—Whereas the Achik National Volunteer Council (hereinafter referred to as the 'ANVC') of Meghalaya have continued collection of funds and extortion, acquisition of sophisticated weapons and recruitment of new cadres despite having agree to abjure violence and having expressed their willingness to hold talks within the framework of the Constitution of India for fulfilling their demands :

And whereas, the Hynniewtrep National Liberation Council (hereinafter referred to HNLC) of Meghalaya have been :—

- (i) openly declared as their objective the secession of the State of Meghalaya from Indian Union;
- (ii) employing and engaging in armed means to achieve their objective;
- (iii) indulging in acts of intimidation, extortion and looting of civilian population for collection of funds for their organization;

And whereas, both ANVC and HNLC have been,—

- (i) maintaining links with other insurgent groups of the North Eastern Region for procuring arms and ammunition and for carrying out acts of violence, extortion, intimidation and looting;
- (ii) maintaining camps in some neighbouring countries for the purpose of sanctuary, training and clandestine procurement of arms and ammunition;

And whereas, the Central Government is of the opinion that for the reasons aforesaid, the ANVC and the HNLC and other bodies set up by them, are unlawful associations;

And whereas, the Central Government is further of the opinion that the aforesaid activities of the ANVC and the HNLC are detrimental to the sovereignty and integrity of India, and if these are not immediately curbed and controlled, the said ANVC and the HNLC would regroup and rearm themselves, expand their cadres, procure sophisticated weapons, cause heavy loss of lives of civilians and Security Forces, and accelerate their activities aimed at secession of Meghalaya from India;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (1) of Section 3 of the Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967 (37 of 1967), the Central Government hereby declares the Achik National Volunteer Council (ANVC) and the Hynniewtrep National Council (HNLC) alongwith all their factions, wings and front organisations to be as unlawful associations;

The Central Government is of further opinion that it is necessary to declare the ANVC and the HNLC alongwith all their factions, wings and front organizations to be as unlawful with immediate effect and accordingly, in exercise of the powers conferred by the proviso to Sub-section (3) of Section 3, the Central Government hereby directs that this notification shall, subject to any order that may be made under Section 4 of the said Act, have effect from the date of its publication in the Official Gazette.

[F No. 11011/47/2004-NE. III]

H. S. BRAHMA, Jt. Secy.